Toppersnotes®
Unleash the topper in you

1st ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 2

पेपर 2 - हिन्दी

स्नातक स्तर

SIERRA INNOVATIONS

INDEX

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	स्नातक स्तर	
1.	शब्द शक्तियाँ, काव्य गुण	1
2.	काव्य-दोष	13
3.	अलंकार	20
4.	छंद	44
5.	रस	54
6.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	67
7.	गद्य की विविध विधाओं का विकास	178
8.	पद्य का विकास	266

1 CHAPTER शब्द शक्तियाँ, काव्य गुण

शब्द शक्ति

परिभाषा :-

- किसी भी शब्द में अंतर्निहित अर्थ को प्रकट करने वाली शक्ति शब्द शक्ति कहलाती है। अर्थात,
- एक ही शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं। उनमें से कौन-सा अर्थ ग्रहण किया जाना है, इसका ज्ञान करवाने वाली शक्ति ही शब्द शक्ति कहलाती है।
- अर्थ के आधार पर शब्द 3 प्रकार के माने जाते हैं, यथा –
  1. **वाचक शब्द** मुख्य अर्थ / लोक-प्रसिद्ध अर्थ / शब्दकोशीय अर्थ को प्रकट करने वाला शब्द।
  2. **लाक्षणिक शब्द** मुख्य अर्थ को छोड़कर लक्षणों के आधार पर अन्य अर्थ को प्रकट करने वाला शब्द।
  3. **व्यंजक शब्द** प्रसंग या सौंदर्य के अनुसार अलग-अलग अर्थ प्रकट करने वाला शब्द।
- उपर्युक्त तीनों शब्दों के आधार पर शब्द शक्ति के भी प्रमुखतः तीन भेद माने जाते हैं: यथा –
  1. **अभिधा शब्द शक्ति**
  2. **लक्षणा शब्द शक्ति**
  3. **व्यंजना शब्द शक्ति**

1. अभिधा शब्द शक्ति

- **परिभाषा** वाक्य में अथवा कविता में प्रयुक्त किए जाने पर यदि कोई शब्द मुख्य अर्थ / लोक-प्रसिद्ध अर्थ / शब्दकोशीय अर्थ को ही प्रकट करता है, तो वहाँ वह शब्द तो वाचक शब्द कहलाता है। उसके द्वारा प्रकट होने वाला अर्थ वाच्यार्थ / मुख्यार्थ / अभिधेयार्थ / साक्षात् संकेतितार्थ कहलाता है एवं उस शब्द की शक्ति अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।
- जैसे :
  - ✓ गधा चर रहा है।
  - ✓ गाय दूध देती है।
  - ✓ मैं राजस्थान में रहता हूँ।

विशेष तथ्य ⇒

- यदि किसी वाक्य अथवा पद में यमक अलंकार प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ सदैव अभिधा शब्द शक्ति ही मानी जाती है।
- जैसे :
  - ✓ हरि (विष्णु) ने नारद को हरि (बंदर) रूप दिया।
  - ✓ "कनक (सोना)–कनक (धाररा) ते सौ गुनी मादकता अधिकाय। वा खाये बौराय जग, इहि पाये बौराय।"
  - ✓ "तों पर वारों उरबसी (अप्सरा) सुनि राधिके सुजन, तु मोहन के उरबसी, हवे उरबसी समान।"
  - ✓ "सोहन ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात, मनो नीलमणि शैल पर आतप परयो प्रभात।"
- यदि किसी पद में उत्प्रेक्षा अलंकार प्राप्त हो रहा हो, एवं उसमें प्रयुक्त शब्द अपने मुख्य अर्थ को ही प्रकट कर रहे हों, तो वहाँ पर भी प्रायः अभिधा शब्द शक्ति ही मानी जाती है।

- **उदाहरण:**
  - ✓ "उन्नत (ऊँचे) हिमालय से घवल, यह सुरसरी यों टूटती। मानो (संभावना) पयोधर (स्तनों) से धरा के, दुग्धधारा छूटती।"
  - ✓ "सोवत सीतानाथ के, भृगु मुनि दीन्हि लात। भृगुकुलपति की गति, मनो सुमिरि यह बात।"
  - ✓ "कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए। हिम के कणों से पूर्ण मानो, हो गए पंकज नए।"
- यदि किसी पद में प्रयुक्त शब्द अपने सामान्य अर्थ को ही प्रकट करते हैं, तो वहाँ भी अभिधा शब्द शक्ति मानी जाती है।
- **उदाहरण:**
  - ✓ "सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल। एहि बानिक मो मन सदा, बसो बिहारीलाल॥"
  - ✓ "सखा साथ में वेणु हाथ में, ग्रीवा में बनमाला। केकी किरीट पीत पट, भूषित राज रंजित लटवाला॥"
  - ✓ "हे प्रभो! आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए। शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए॥ लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें। ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें॥
- **आचार्य भरतमुनि** द्वारा प्रतिपादित रस-सूत्र के तीसरे व्याख्याता आचार्य भट्टनायक के द्वारा भी अभिधा शब्द शक्ति से युक्त काव्य को ही उत्तम काव्य माना गया है।
- **रीतिकालीन देव कवि** के द्वारा भी अभिधा शब्द शक्ति से युक्त काव्य को ही उत्तम काव्य माना गया है। यथा –
  - ✓ "अभिधा उत्तम काव्य है, मध्यम लक्षणा लीन। अधम व्यंजना रस विना, उलटी कहत प्रवीन॥"
- **अभिधा शब्द शक्ति के द्वारा** शब्द के मुख्य अर्थ को ही प्रकट किया जाता है। जिसके कारण अभिधा शब्द शक्ति को 'मुख्या शक्ति' एवं 'अग्रिमा शक्ति' के नाम से भी पुकारा जाता है।
  - ✓ "नाहन म पावक प्रबल लुएँ, चलत चंपा पास। मानहुं विरह बसंत ले, ग्रीष्म लेत उसास॥" (बिहारी का दोहा – उत्प्रेक्षा अलंकार है, अभिधा शब्द शक्ति)
- **उदाहरण:**
  - ✓ "मोर मुकुट की चंद्रिकनु, यो राजत नंद नंद। मनु शशि शंकर की अकस, कियौ शेखर शतचंद॥" (यहाँ भी अभिधा शब्द शक्ति)

लक्षणा शब्द शक्ति

परिभाषा :-

- वाक्य में अथवा कविता में प्रयुक्त किए जाने पर जब किसी शब्द के मुख्य अर्थ / लोकप्रसिद्ध अर्थ / शब्दकोशीय अर्थ को ग्रहण करने में कोई बाधा उत्पन्न हो जाती है, तब उस शब्द के लक्षणों के आधार पर उस शब्द का कोई अन्य अर्थ ग्रहण कर लिया जाता है। तो वहाँ वह शब्द **लक्षक शब्द** कहलाता है।
- उसके द्वारा प्रकट होने वाला अर्थ **लक्ष्यार्थ / आरोपितार्थ / अन्यार्थ** कहलाता है। एवं उस शब्द की शक्ति **लक्षणा शब्द शक्ति** कहलाती है।
- **लक्षणा शब्द शक्ति के लिए प्रमुखतः निम्नलिखित तीन बातों को आवश्यक माना जाता है :**
  1. शब्द के मुख्य अर्थ / लोकप्रसिद्ध अर्थ / शब्दकोशीय अर्थ को ग्रहण करने में कोई बाधा उत्पन्न होना।
  2. लक्षणों के आधार पर उस शब्द का कोई अन्य अर्थ ग्रहण करना।
  3. उस अन्य अर्थ को ग्रहण करने के पीछे कोई रूढ़िवादी परंपरा अथवा 'किसी प्रयोग विशेष' का होना।
- **जैसे:**
  - ✓ राम गधा है। (मूर्ख)
  - ✓ सीता तो निरी गाय है। (सीधी-सादी)
  - ✓ मैं राजस्थान में रहता हूँ। (राजस्थान के लोग)
- "उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त रेखांकित शब्दों के मुख्य अर्थ को ग्रहण करने पर कोई न कोई बाधा उत्पन्न होती है। तब इनके लक्षणों के आधार पर इनके अन्य अर्थ (मूर्ख, सीधी-सादी, राजस्थान के लोग) ग्रहण करने पर इनका पूर्ण भाव स्पष्ट हो जाता है। अतएव इन सभी वाक्यों में **लक्षणा शब्द शक्ति** मानी जाती है।"

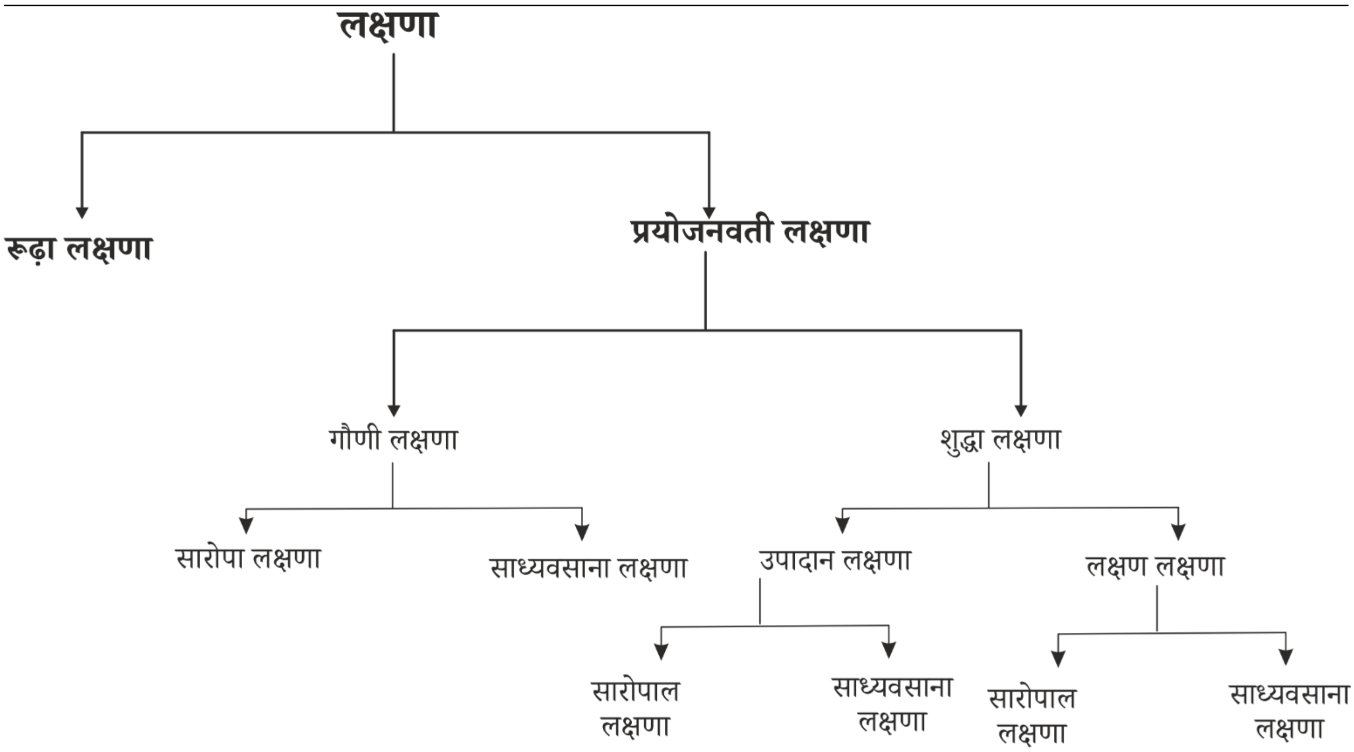

भेद–2

- “साहित्य दर्पणकार” आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा के प्रमुखतः दो भेद माने हैं— यथा: **रूढ़ा लक्षणा प्रयोजनवती लक्षणा** पुनः, उन्होंने रूढ़ा लक्षणा के 8 उपभेद और प्रयोजनवती लक्षणा के 80 भेद स्वीकार किए हैं।
- ‘काव्यप्रकाश’कार आचार्य मम्मट ने "लक्षणा ते षड्विधा" यह कथन लिखकर लक्षणा के 2 मुख्य भेदों के अलावा भी 6 अन्य भेद स्वीकार किए हैं। (मम्मट के लक्षणा के कुल 6 भेद माने गए हैं।)
- वर्तमान में लक्षणा शब्द-शक्ति के निम्नानुसार कुल 8 भेद स्वीकार किए जाते हैं, जिन्हें प्रमुखतः 4 समूहों में विभाजित किया जा सकता है।

ToppersNotes Unleash the topper in you

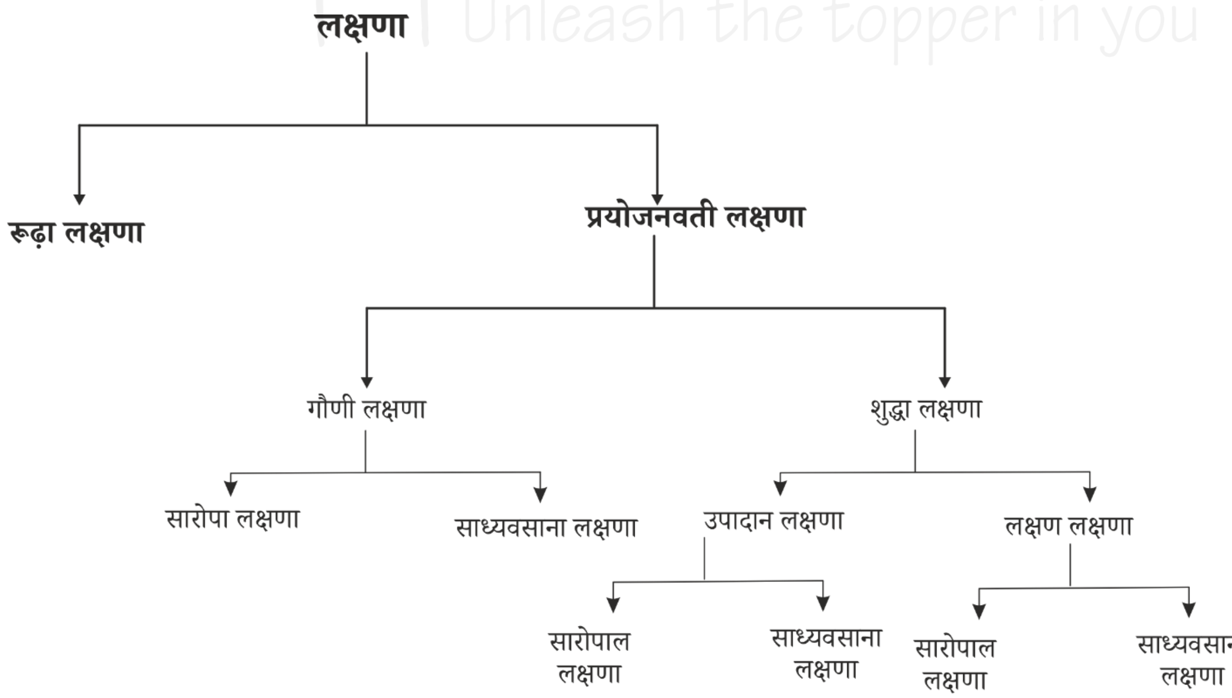

रूढ़ा लक्षणा

परिभाषा

- जब कोई शब्द प्रत्येक समय पर एवं प्रत्येक स्थान पर एक जैसे लाक्षणिक अर्थ को ही प्रकट करता है, तो वहाँ **रूढ़ा लक्षणा** शब्द-शक्ति मानी जाती है।
- मुहावरे, मुक्त वाक्यों / पदों में सदैव रूढ़ा लक्षणा शब्द-शक्ति ही मानी जाती है।
- **अवसर विशेष / स्थान विशेष / समय विशेष के अनुसार अर्थ बदलता है:** जब कोई शब्द समय एवं स्थान के अनुसार अलग-अलग लाक्षणिक अर्थ प्रकट करता है, अर्थात समय एवं स्थान बदलते ही यदि लक्ष्यार्थ बदल जाता है, तो वहाँ **प्रयोजनवती लक्षणा** मानी जाती है। **जैसे:**

1. **पंजाब साहसी है।**
   - ✓ उपर्युक्त वाक्य में प्रयुक्त 'पंजाब' शब्द का लाक्षणिक अर्थ 'पंजाब के लोग' ग्रहण किया जाता है। हिन्दी जानने वाला प्रत्येक व्यक्ति, हर समय और हर स्थान पर इसी लाक्षणिक अर्थ को ग्रहण करता है। **अतएव यहाँ रूढ़ा लक्षणा शब्द-शक्ति मानी जाती है।**
2. **भारत जीत गया।** लाक्षणिक अर्थ = भारत देश का दल है

प्रयोजनवती लक्षणा

श्वेत दौड़ रहा है। = (लाक्ष्य काव्य: श्वेत)

- उपरोक्त वाक्य में प्रयुक्त श्वेत शब्द लाक्षक शब्द है। अलग-अलग समय एवं स्थान के अनुसार इस शब्द के अलग-अलग लाक्षणिक अर्थ ग्रहण किए जा सकते हैं:
  - (i) किसी घुड़ दौड़ प्रतियोगिता के अवसर पर ⇒ श्वेत रंग का घोड़ा
  - (ii) किसी श्वान दौड़ प्रतियोगिता के अवसर पर ⇒ श्वेत रंग का कुत्ता
- इस प्रकार अवसर विशेष के अनुसार अलग-अलग लाक्षणिक अर्थ प्रकट होने के कारण यहाँ **प्रयोजनवती लक्षणा** शब्द-शक्ति मानी जाती है। **उदाहरण:**
  - ✓ बाजार में लाठियाँ चल रही थीं। **रूढ़ा लक्षणा**
  - ✓ "जाके पाँव न फटी बिवाई। वो क्या जाने पीर पराई।" — **रूढ़ा लक्षणा**
  - ✓ मनुष्य को अपने जीवन में अनेक पर्वत पार करने पड़ते हैं। — **रूढ़ा लक्षणा**
  - ✓ अब भाले प्रवेश कर रहे हैं? — **प्रयोजनवती लक्षणा**
  - ✓ ये झंडे कहाँ जा रहे हैं? — **प्रयोजनवती लक्षणा**

काव्य उदाहरण:

"दृग उरझत टुटत कुटुम, जुरत चतुर चित्त प्रीति। परत गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीत।"

"खरी पातरी कान की कौन बहाऊ बानि। आक कलि न रलि करे अली अली जिय जानि।"

"उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग। विकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।" — **[प्रयोजनवती लक्षणा]**

- **रूपक अलंकार** होने पर हमेशा **लक्षणा** शब्द-शक्ति होती है और लक्षणा में भी प्रायः **प्रयोजनवती लक्षणा** होती है।

"नारी कमुदिनी अवध बसा रघुवर विरह दिनेश अस्त भए प्रमुदित भई, निरखि राम राकेश।" — **[प्रयोजनवती लक्षणा]**

अन्य उदाहरण: पंजाब शेर है। — **[रूढ़ा लक्षणा]** मुख–चन्द्र है। — **[प्रयोजनवती लक्षणा]** सारा घर तमाशा देखने रहा है। = **[प्रयोजनवती लक्षणा]**

गौणी लक्षणा एवं शुद्धा लक्षणा

- लक्षणा शब्द-शक्ति में **लक्ष्यार्थ** को ग्रहण करने के लिए निम्नलिखित **8 प्रकार के संबंध** कार्य करते हैं:
  - ✓ **साध्य-साधन संबंध** गौणी लक्षणा
  - ✓ **सामीप्य** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **वैपरीत्य** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **कार्य-कारण** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **आधार-आधेय संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **धार्य-धारक** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **अंग-अंगी** शुद्धा लक्षणा
- इन आठों संबंधों में से यदि **सदृश्य संबंध** के आधार पर लक्षणा शब्द-शक्ति प्राप्त हो रही हो, तो वहाँ **गौणी लक्षणा** मानी जाती है। अन्य किसी भी संबंध के आधार पर लक्षणा शब्द-शक्ति प्राप्त हो रही हो, तो वहाँ **शुद्धा लक्षणा** मानी जाती है।
- **उदाहरण सहित स्पष्टता:**
  - ✓ **"मुख चन्द्र है"** लक्षणा – प्रयोजनवती लक्षणा, **सदृश्य संबंध** गौणी लक्षणा
  - ✓ **"साधु गंगा में बसता है"** प्रयोजनवती लक्षणा, **सामीप्य संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"इस घर में तो नौकर मालिक है"** प्रयोजनवती लक्षणा, **वैपरीत्य संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"सारा घर तमाशा देखने गया है"** प्रयोजनवती लक्षणा, **आधार-आधेय संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"ये झंडे कहाँ जा रहे हैं?"** प्रयोजनवती लक्षणा, **धार्य-धारक संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"संपत्ति ही सुख है"** प्रयोजनवती लक्षणा, **कार्य-कारण संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"ये चरण मेरे लिए कल्याणकारी हैं"** प्रयोजनवती लक्षणा, **अंग-अंगी संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"ए रे मतिमंद अब आवत न तोहि लाज, हो के द्विजराज काज करत कसाई के"** प्रयोजनवती लक्षणा, **तात्पर्य संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"सत्संगति ही मोक्ष है"** प्रयोजनवती लक्षणा, **कार्य-कारण संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"है करती दु:ख दूर सभी उनके मुख-पंकज की मधुराई..."** प्रयोजनवती लक्षणा, **सदृश्य संबंध** गौणी लक्षणा
  - ✓ **"कौशल्या के वचन सुनि भरत सहित रनिवास..."** प्रयोजनवती लक्षणा, **आधार-आधेय संबंध** शुद्धा लक्षणा (उपादान लक्षणा)
  - ✓ **"मैं हूँ बहन पर भाई नहीं है। राखी सजी पर, कलाई नहीं है।"** प्रयोजनवती लक्षणा, **अंग-अंगी संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"नारी कुमुदिनी अवध सर रघुवर विरह दिनेश..."** प्रयोजनवती लक्षणा, **सदृश्य संबंध** गौणी लक्षणा
  - ✓ **"दो बंदूकों ने सारे गाँव को लूट लिया।"** प्रयोजनवती लक्षणा, **धार्य-धारक संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"गंगा में घर बसाया है, तो सर्दी तो लगेगी ही।"** प्रयोजनवती लक्षणा, **सामीप्य संबंध** शुद्धा लक्षणा
  - ✓ **"अति कटु वचन कहत कैकेई, मनहु लूण करै पर देई।"** रूढ़ लक्षणा (उत्प्रेक्षा अलंकार; मुहावरा)

लक्षणा के विशेष प्रकार:

1. उपादान लक्षणा (अजहत्स्वार्था लक्षणा)

2. लक्षण लक्षणा (जहत्स्वार्था लक्षणा):

1. उपादान लक्षणा (अजहत्स्वार्था लक्षणा):

- **अजहत्स्वार्था** = अ + जहत् + स्व + अर्थ
- इसका अर्थ होता है: मुख्य अर्थ नहीं छूटता।
- जब लक्ष्यार्थ ग्रहण करने पर भी मूल अर्थ साथ बना रहता है, तो वहाँ **उपादान लक्षणा** या **अजहत्स्वार्था लक्षणा** मानी जाती है।

2. लक्षण लक्षणा (जहत्स्वार्था लक्षणा):

- **जहत्स्वार्था** = मुख्य अर्थ का त्याग
- जब लक्ष्यार्थ ग्रहण करने पर मुख्य अर्थ पूरी तरह छूट जाता है, तो वहाँ **लक्षण लक्षणा** या **जहत्स्वार्था लक्षणा** मानी जाती है।
- उदाहरण सहित:
  - ✓ "सारा घर तमाशा देखने गया है।" प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा उपादान लक्षणा
  - ✓ "पेट में आग लगी है।" प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा लक्षण लक्षणा
  - ✓ "चाहे जितना अर्घ्य चढ़ाओ…" प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा लक्षण लक्षणा
  - ✓ "कच समेटि करि भुज उलटी…" प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा लक्षण लक्षणा
  - ✓ "दो बंकों ने सारे गाँव को लूट लिया।" प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा उपादान लक्षणा
  - ✓ "लाल पगड़ी आ रही है।" प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा लक्षण लक्षणा

प्रश्न: "अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी" प्रस्तुत पद में शब्द-शक्ति कौन-सी है?

(A) रूढ़ लक्षणा **(B)** शुद्धा लक्षणा **(C)** लक्षणा **(D)** सारोपलक्षणा

सारोपा लक्षणा व साध्यवसाना लक्षणा

- जब किसी पद में उपमेय एवं उपमान दोनों लिखे रहते हैं, तो वहाँ सारोपा लक्षणा मानी जाती है। रूपक अलंकार युक्त पदों में प्रायः सारोपा लक्षणा शब्द-शक्ति ही कार्य करती है।
- जब किसी पद में कवि के द्वारा केवल उपमान पद/पदों का ही प्रयोग किया जाता है, पाठक या श्रोता अपनी बुद्धि से ही उनका कोई प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करते हैं, तो वहाँ साध्यवसाना लक्षणा मानी जाती है।
- रूपकातिशयोक्ति अलंकार युक्त पदों में प्रायः साध्यवसाना लक्षणा शब्द-शक्ति ही मानी जाती है।
  - ✓ "सरस विलोचन विधु-वदन लख आलि घनश्याम।" लक्षणा – प्रयोजनवती – गौणी – सारोपा लक्षणा
  - ✓ "करन कलता पर चन्द्रमा, धने धनुष द्वै बान।" लक्षणा – प्रयोजनवती – गौणी – साध्यवसाना लक्षणा
  - ✓ मुख-चन्द्र है। लक्षणा – प्रयोजनवती – गौणी – सारोपा लक्षणा
  - ✓ "नारी कुमुदिनी अवध सर रघुवर विरह दिनेश, अस्त भए प्रमुदित भई, निरखि राम राकेश।" लक्षणा – प्रयोजनवती – गौणी – सारोपा लक्षणा
  - ✓ "चाहे जितना अर्घ्य चढ़ाओ, पत्थर पिघल नहीं सकता। चाहे जितना दूध पिलाओ, अहि विष निगल नहीं सकता।" लक्षणा – प्रयोजनवती – शुद्धा – लक्षण लक्षणा – साध्यवसाना
  - ✓ पेट में आग लगी है। लक्षणा – प्रयोजनवती – शुद्धा – लक्षण लक्षणा – साध्यवसाना
  - ✓ "साख! नील नम सर में उतरा यह हंस, अहा तरता-तरता। अब साग रूपक तारक मौक्तिक शेष नहीं निकला उनको चरता-चरता।" लक्षणा – प्रयोजनवती – गौणी – सारोपा
  - ✓ "मान सरोवर सुभर जल, हंसा केलि करोहि। मुकता फल मुकता चुगै, अब उड़ी अनत न जांहि।" लक्षणा – प्रयोजनवती – गौणी – साध्यवसाना

<u>व्यंजना शब्द-शक्ति</u>

परिभाषा:

- वाक्य अथवा कविता में प्रयुक्त किए जाने पर यदि कोई शब्द अलग-अलग प्रसंग/संदर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ प्रकट करने लगता है, तो वह शब्द 'व्यंजक शब्द' कहलाता है।
- उसके द्वारा प्रकट होने वाला अर्थ 'व्यंग्यार्थ, ध्वन्यार्थ एवं प्रतीयमानार्थ' कहलाता है एवं उस शब्द की शक्ति 'व्यंजना शब्द-शक्ति' कहलाती है।

➢ **उदाहरण:**
  ✓ उस आग में जल (जलना/पानी) जाने से क्या होता है?
  ✓ प्रस्तुत वाक्य में 'जल' शब्द का अर्थ अलग-अलग लोग अलग-अलग रूप में [जलना या पानी] ग्रहण कर सकते हैं, अतः यहाँ व्यंजना शब्द-शक्ति मानी जाती है।
  ✓ "पुजारी ने कहा, 'अरे! संध्या हो गई।'"
  ✓ इस वाक्य को सुनकर:
    - पुजारी के अनुसार: पूजा का समय हो गया।
    - किसान के अनुसार: घर जाने का समय।
    - गृहिणी के अनुसार: रसोई का समय।
    - इस प्रकार संदर्भानुसार अलग-अलग अर्थ ग्रहण होने से व्यंजना शब्द-शक्ति मानी जाती है।

व्यंजना के भेद – 2

1. शाब्दी व्यंजना **2. आर्थी व्यंजना**

1. शाब्दी व्यंजना

➢ जब किसी पद में किसी विशेष शब्द के कारण ही व्यंजना की प्राप्ति होती है।
➢ अर्थात यदि उस शब्द को हटाकर उसका कोई पर्यायवाची रख दें, तो व्यंजना का प्रभाव समाप्त हो जाता है, तब वहाँ शाब्दी व्यंजना मानी जाती है।
➢ श्लेष अलंकार युक्त पदों में प्रायः शाब्दी व्यंजना ही होती है।
➢ **उदाहरण:**
  ✓ "कौआ उड़ता आकाश में, मगर रहता कहाँ?"
  ✓ "मैं सालों से परेशान हूँ।"
  ✓ "रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।"
  ✓ "पानी गए न उबरे, मोती, मानुष, चून।।"

शाब्दी व्यंजना के उपभेद – 2

➢ शाब्दी व्यंजना के भी पुनः दो उपभेद माने जाते हैं:
  i. अभिधा-मूल शाब्दी व्यंजना ii. लक्षणा-मूल शाब्दी व्यंजना

i. अभिधा-मूल शाब्दी व्यंजना

➢ जब किसी पद में अलग-अलग अर्थ ग्रहण करने पर भी उसका मुख्य अर्थ (अभिधापरक अर्थ) सदैव साथ में जुड़ा रहता है, तो वहाँ अभिधा-मूल शाब्दी व्यंजना मानी जाती है।
  उदाहरण: "चिरजीवो जोरी जुरै क्यों न स्नेह गंभीर, का घाटि ए वृषभानुजा वे हलधर के बीर।"
➢ यहाँ वृषभानुजा एवं हलधर शब्दों के निम्नानुसार अलग-अलग अर्थ ग्रहण किए जाते हैं:

वृषभानुजा के अर्थ	हलधर के अर्थ
(क) 'वृषभानु + जा' = वृषभानु जैसे श्रेष्ठ ग्वाले की पुत्री (राधा)	(क) बलराम जैसे श्रेष्ठ योद्धा का भाई (कृष्ण)
(ख) 'वृष + अनुजा' = गाय के समान पशुवत आचरण करने वाली (राधा)	(ख) बैल के समान पशुवत आचरण करने वाला (कृष्ण)
(ग) 'वृषन भानु + जा' = वर्ष राशि के सूर्य की किरणों के समान प्रचंड क्रोध वाली (राधा)	(ग) शेषनाग के समान प्रचंड क्रोध वाला (कृष्ण)

➢ इन सभी अर्थों के ग्रहण किए जाने पर भी वृषभानुजा और हलधर शब्दों के अभिधापरक अर्थ (राधा एवं कृष्ण) सदैव जुड़े रहते हैं, इसलिए यहाँ अभिधा-मूल शाब्दी व्यंजना मानी जाती है।

ii. लक्षणा-मूल शाब्दी व्यंजना

- जब किसी पद में प्रयुक्त शब्द का कोई लाक्षणिक अर्थ ग्रहण किया जाए और वह अर्थ लक्षणा शब्द-शक्ति के आधार पर ही संभव हो, तो वहाँ लक्षणा-मूल शाब्दी व्यंजना मानी जाती है।

  उदाहरण: "अजौं त्रयोना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक अंग। नाक बास बेसरी लह्यो, बसि मुकतनु के संग।।"

- **बेसरी** शब्द के अर्थ:
  - ✓ नाक का आभूषण (मुख्य/अभिधा अर्थ)
  - ✓ महा अधम प्राणी (लाक्षणिक अर्थ)
- यहाँ बेसरी का अभिधा परक अर्थ "खच्चरी" होता है, और उसका लाक्षणिक अर्थ "मूर्ख" या "महा अधम प्राणी" होता है। इस प्रकार लक्षणा के आधार पर अन्य अर्थ प्रकट होने के कारण लक्षणा-मूल शाब्दी व्यंजना मानी जाती है।

2. आर्थी व्यंजना

- आर्थी व्यंजना में अर्थ का प्रभाव होता है, शब्द का नहीं।
- जब किसी पद में कोई ऐसा अर्थ ग्रहण किया जाता है जो शब्द की बजाय उस अर्थ के संदर्भ/प्रसंग पर निर्भर करता है — और उस पद में प्रयुक्त शब्द को हटाकर कोई पर्यायवाची शब्द रखने पर भी अर्थ वही बना रहता है — तो वहाँ आर्थी व्यंजना मानी जाती है।
- **परिभाषा:** जब किसी पद का वाच्यार्थ/मुख्यार्थ ग्रहण कर लेने के बाद भी, पाठक या श्रोता अपनी कल्पना से कोई अन्य अर्थ भी ग्रहण कर लेते हैं, तो वहाँ आर्थी व्यंजना शब्द-शक्ति मानी जाती है।
- **उदाहरण: "पुजारी ने कहा, 'अरे! संध्या हो गई।'"** इस वाक्य को सुनकर भिन्न-भिन्न लोगों द्वारा भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण किए जाते हैं:
  - ✓ **पुजारी**: पूजा का समय हो गया।
  - ✓ **किसान**: घर लौटने का समय।
  - ✓ **गृहिणी**: रसोई का समय।
- यहाँ 'संध्या' शब्द को हटाकर यदि 'शाम' लिख भी दिया जाए, तो भी विभिन्न अर्थ प्रकट होते हैं। इसलिए यहाँ आर्थी व्यंजना मानी जाती है। (यहाँ अर्थ का प्रभाव है, शब्द का नहीं।)

  उदाहरण 1: "उधौ भले लोग अगे के परहित डोलत धायें।"

  वाच्यार्थ: गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं कि – "हे उद्धव! प्राचीन समय के लोग बड़े भले होते थे, जो दूसरों के हित के लिए दौड़े चले आते थे।"

  व्यंग्यार्थ: लेकिन आज तुम्हारे जैसे लोग हो गए हैं, जो हम भोली-भाली गोपिकाओं को पीड़ा पहुँचाने के लिए दौड़े चले आते हैं। इस कल्पनात्मक व्यंग्यार्थ के कारण यहाँ आर्थी व्यंजना है।

  उदाहरण 2: "सिन्धु तरयो उनको बनरा, तुम ते धनु रेख गई न तरी। बन्ध्योई बाँधन सो न बन्ध्यो, उन वारिधि बाँधि के बाट करी।।"

  वाच्यार्थ: अंगद रावण से कह रहा है कि – "राम के एक वानर हनुमान ने समुद्र पार कर लिया था, और तुमसे लक्ष्मण द्वारा खींची गई एक धनु-रेखा तक पार नहीं हो सकी। तुमने हनुमान को बाँधने की कोशिश की, लेकिन बाँध नहीं पाए। जबकि राम के वानरों ने समुद्र बाँधकर लंका तक का रास्ता बना लिया।"

  व्यंग्यार्थ: जब तुम राम के एक वानर का कुछ नहीं बिगाड़ सके, तो राम की शक्ति का मुकाबला कैसे कर सकोगे? इस प्रकार कल्पना के आधार पर गूढ़ भाव प्रकट होने से आर्थी व्यंजना है।

उदाहरण 3: "सधन कुंज छाया सुखद शीतल मंद समीर, मन हवे जात आजु वहै वा जमुना के तीर।"

वाच्यार्थ: गोपिका अपनी सखी से कह रही है – "जहाँ घने वृक्षों की सुखद छाया है, और मंद-मंद शीतल पवन बह रही है, मेरा मन करता है कि आज उसी यमुना के तट पर जाकर बस जाऊँ।"

व्यंग्यार्थ: मैं कृष्ण के समीप रहना चाहती हूँ। कल्पना से उपजा यह व्यंग्यार्थ आर्थी व्यंजना है।

उदाहरण 4: "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

वाच्यार्थ: स्त्री के मातृत्व और करुणा भाव की अभिव्यक्ति।

व्यंग्यार्थ: (i) स्त्री की ममता भावना। (ii) स्त्री की विवशता और कष्ट सहने की क्षमता।

उदाहरण 5: "जमुना कूल मीन तड़पत है हुलसी होत जल पीन।"

मुख्य अर्थ: यमुना के तट पर मछलियाँ जल के लिए तड़प रही हैं।

अन्य अर्थ (व्यंग्यार्थ): यमुना तट पर गोपियाँ कृष्ण से मिलने के लिए तड़प रही हैं। यह गूढ़ अर्थ कल्पना से उपजता है, इसलिए आर्थी व्यंजना है।

शब्द-शक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

विशेषताएँ	अभिधा	लक्षणा	व्यंजना
1. अर्थ ग्रहण का प्रकार	शब्द का मुख्य/लोकप्रसिद्ध/शब्दकोशीय अर्थ	लक्षणों के आधार पर मुख्य अर्थ से हटकर अर्थ	संदर्भानुसार कल्पनात्मक अर्थ
2. अर्थ की निश्चितता	अर्थ पूर्णतः निश्चित होता है	अर्थ की दिशा निश्चित होती है	अर्थ अनिश्चित होता है
3. कल्पना की भूमिका	कल्पना की आवश्यकता नहीं	थोड़ा बहुत कल्पना सहायक	कल्पना प्रमुख होती है
4. अन्य शब्द-शक्ति की आवश्यकता	नहीं होती	अभिधा की आवश्यकता होती है	अभिधा एवं लक्षणा दोनों की आवश्यकता होती है
5. उपभेदों की संख्या	**8**	**2**	**2**

<u>काव्य गुण</u>

- किसी भी पदार्थ में प्राप्त होने वाली विशेषता को ही उस पदार्थ का गुण कहा जाता है।
- विशेषत: सामान्यतः आचार्य वामन के द्वारा प्रतिपादित रीति सम्प्रदाय को गुण सम्प्रदाय भी कहा जाता है।
- **रीति एवं गुण में प्रमुख अन्तर**
  - ✓ काव्य रीति एवं काव्य गुण में प्रमुखतः रचना शैली एवं अर्थ शैली का अन्तर माना जाता है।
  - ✓ अर्थात् किसी भी पद की रचना करने के लिए कवि ने शब्दों का प्रयोग जिस आधार पर किया है, उसे तो काव्य रीति कहा जाता है।
- किसी भी पद का अर्थ कैसा ग्रहण किया गया है, उसे काव्य गुण कहा जाता है।
- साहित्य में प्रमुखतः 3 काव्य रीतियाँ मानी जाती हैं। यथा →
  1. **वैदर्भी रीति** → तीनों का अभाव
  2. **गौड़ी रीति** → तीनों की अधिकता
  3. **पांचाली रीति** → तीनों का मध्यम प्रयोग
- इन तीनों काव्य रीतियों की पहचान के भी निम्नलिखित 3 प्रमुख आधार माने गए हैं:
  1. सामासिक पद
  2. संयुक्ताक्षर
  3. 'ट' वर्गीय (ट, ठ, ड, ढ, ण)
- अर्थात् यदि किसी पद में इन तीनों का लगभग अभाव पाया जाता है तो वहाँ वैदर्भी रीति मानी जाती है। इन तीनों की अधिकता होने पर गौड़ी रीति मानी जाती है। एवं इन तीनों का मध्यम प्रयोग होने पर पांचाली रीति मानी जाती है।

काव्य गुण की परिभाषा

- रीति एवं गुण सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन ने स्वरचित काव्यालंकार सूत्रवृत्ति रचना में गुण की परिभाषा देते हुए लिखा है: **"काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः। तदतिशय हेतवस्त्वलंकाराः।।"**
- अर्थात् काव्य की शोभा करने वाले धर्म ही (शब्द एवं अर्थ) काव्य गुण कहलाते हैं। एवं उन काव्य गुणों के अत्यधिक प्रयोग के देना को अलंकार कहा जाता है।
- **अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक** → भामह – का`व्यालंकार **रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक** → भरतमुनि – नाट्यशास्त्र **रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक** → वामन – काव्यालंकार **गुण सम्प्रदाय के प्रवर्तक** → वामन – काव्यालंकार सूत्र वृत्ति

काव्य गुणों के विवेचन का इतिहास →

- साहित्य में काव्य गुणों का सर्वप्रथम विवेचन

1. ई. पूर्व प्रथम शताब्दी में आचार्य भरतमुनि के इन्होने कुल 10 काव्य गुण स्वीकार किये थे यथा → **श्लेष:, प्रसाद:, समता, समाधि:, माधुर्यमोज:, पदसौकुमार्यम । अर्थस्य च व्यक्तिरुदारता च, कीचिश्च काव्यस्थ गुणा दशौते ।**
   1. श्लेष गुण
   2. प्रसाद गुण
   3. समता गुण
   4. समाधि गुण
   5. माधुर्य गुण
   6. ओज गुण
   7. पद सौकुमार्यता/पद सुकुमारता
   8. अर्थव्यक्ति गुण
   9. उदारता/औदार्य गुण
   10. कान्ति गुण
2. **भरतमुनि के बाद** 6वीं (छठी) शताब्दी में आचार्य भामह के द्वारा भी इन्हीं 10 काव्य गुणों को स्वीकार किया गया। लेकिन आचार्य भामह ने इन 10 गुणों में से प्रसाद एवं माधुर्य गुण की श्रेष्ठता स्वीकार की।
3. इसके बाद आचार्य दण्डी के द्वारा भी इन्हीं 10 काव्य गुणों को स्वीकार करते हुए इन्हें वैदर्भी मार्ग के प्राण कहकर पुकारा गया। यथा → "**श्लेषः प्रसादः समता, माधुर्यं सौकुमार्यता। अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजः कान्तिः समाधयः। इति वैदर्भमार्गस्य प्राणाः दशगुणाः स्मृताः।" एषां विपर्ययः प्रायः दृष्टिचेत गौडमार्गे।** अर्थात् साहित्य में ये 10 काव्य गुण माने जाते हैं:
   1. श्लेष
   2. प्रसाद
   3. समता
   4. माधुर्य
   5. सौकुमार्यता
   6. अर्थव्यक्ति
   7. उदारता
   8. ओज
   9. कान्ति
   10. समाधि

- उपर्युक्त सभी 10 काव्य गुण वैदर्भी मार्ग (वैदर्भी रीति) के प्राण माने जाते हैं, एवं इन गुणों का अभाव प्रायः गौड़ीय मार्ग (गौड़ी रीति) में पाया जाता है।

4. दण्डी के बाद 8वीं शताब्दी में आचार्य वामन के द्वारा प्रमुखतः 2 काव्य गुण स्वीकार किए गए, यथा —
   1. शब्द गुण
   2. अर्थ गुण

- पुनः इन दोनों के पूर्वोक्त 10-10 भेद स्वीकार करते हुए आचार्य वामन ने कुल 20 गुण स्वीकार किए।

5. आचार्य वामन का अनुसरण करते हुए आचार्य भोजराज के द्वारा भी प्रमुखतः 2 काव्य गुण ही स्वीकार किए गए:
   1. शब्द गुण/बाह्य गुण
   2. अर्थ गुण/अभ्यंतर गुण

- पुनः इन दोनों के 24-24 उपभेद स्वीकार करते हुए आचार्य भोजराज ने कुल 48 काव्य गुण स्वीकार किए, जो काव्य गुणों की सर्वाधिक संख्या मानी जाती है।

6. 12वीं शताब्दी में आचार्य मम्मट के द्वारा समस्त काव्य गुणों को निम्नलिखित तीन काव्य गुणों में ही समाहित कर दिया गया —
   1. प्रसाद गुण
   2. ओज गुण
   3. माधुर्य गुण
7. इसके बाद आचार्य विश्वनाथ (14वीं शताब्दी) एवं आचार्य पंडितराज जगन्नाथ (17वीं शताब्दी) के द्वारा भी इन तीन काव्य गुणों को मान्यता दी गई। अतः साहित्य जगत में वर्तमान में निम्नलिखित तीन काव्य गुण ही स्वीकार किए जाते हैं —
   1. प्रसाद गुण
   2. ओज गुण
   3. माधुर्य गुण

1. प्रसाद गुण:

- ✓ ऐसी काव्य रचना जिसमें इतने सरल एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है कि एक सामान्य बुद्धि का पाठक भी उनका अर्थ ग्रहण कर लेता है, तो वह प्रसाद गुण माना जाता है।
- ✓ 'स्वच्छता एवं स्पष्टता' प्रसाद गुण की प्रमुख विशेषता मानी जाती है।
- ✓ प्रसाद गुण की उपमा सूखी लकड़ी एवं धुले हुए वस्त्र से दी जाती है।
- ✓ आचार्य भिखारीदास ने प्रसाद गुण की परिभाषा देते हुए लिखा है — **"मन रोचक अच्छर परैं, सौहैं सिथिल सरीर। गुण प्रसाद जल सूक्ति ज्यों, प्रगट अरथ गंभीर।"** अर्थात — जब किसी पद में हमारे मन को अच्छे लगने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है, तो वहाँ प्रसाद गुण माना जाता है।
- ✓ इस गुण के द्वारा अर्थ स्पष्ट और सहज रूप में प्रकट होता है।
- ✓ आचार्य भिखारीदास ने प्रसाद गुण की उपमा "जलसूक्ति" से दी है।
- ✓ जैसे →

  हे प्रभो! आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए। शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

  लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें। बहुचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें। [अभिधा शब्दशक्ति] [गीतिका छंद] [प्रसाद गुण]

  "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।" [प्रसाद गुण]

  "है बिखेर देती वसुंधरा मोती सबके सोने पर, रवि बटोर लेता है उनको सदा सवेरा होने पर"। [प्रसाद गुण]
- ✓ **स्पष्टीकरण:** उपर्युक्त सभी पदों में इतने सरल एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया है कि एक साधारण पढ़ा-लिखा पाठक भी सरलता से इनका अर्थ ग्रहण कर लेता है। अतः इन सभी पदों में "प्रसाद गुण" माना जाता है।

2. ओज गुण

- ✓ ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ने पर हमारे हृदय में वीरता, क्रोध, भय, जुगुप्सा (घृणा) इत्यादि के भाव उत्पन्न हो जाते हैं, तो वहां ओज गुण माना जाता है।
- ✓ गौड़ी रीति की तरह ओज गुण युक्त रचनाओं में सामासिक पदों, संयुक्ताक्षरों एवं ट वर्गीय वर्णों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।
- ✓ ओज गुण युक्त रचनाओं में प्रायः वीर रस, रौद्र रस, वीभत्स रस प्रमुखता से पाया जाता है। एवं कुछ विद्वानों के अनुसार भयानक रस युक्त पदों में भी ओज गुण माना जाता है।
- ✓ आचार्य भिखारीदास ने ओज गुण की परिभाषा देते हुए लिखा है – **"उद्धत अच्छर जहँ भरे, स-क-ट युत मिलि जाई। ताहि ओज गुण कहते हैं, जे प्रवीण कविराई।"** अर्थात्, ऐसी काव्य रचना जिसमें कठोर वर्णों का अधिक प्रयोग किया जाता है – स, क वर्गीय वर्णों एवं ट वर्गीय वर्णों का अधिक प्रयोग किया जाता है तो वहाँ ओज गुण माना जाता है।
- ✓ **ओज गुण के उदाहरण** –

  "मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे। यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे। हे सारथे! हैं द्रोण क्या, आवें स्वयं देवेन्द्र भी। वे भी न जीतेंगे समर में, आज क्या मुझसे कभी।।" [वीर रस] ओज गुण

  "रे नृप! बालक कालबस बोलत तोहिं न संभार। धुनहि सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार॥" [वीर रस]

  "सिर पर बैठ्यो काग, आँख दोउ खात निकारत। खींचत जीमहि स्यार, अतिहि आनंद उर धारत॥" [वीर रस]

  "कहीं हाड़ परयो, कहीं जरयो, अध जरयो मांस॥" [बीभत्स रस]

  "एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय। विकल बटोही बीच हवै, पड्यो मुचछर्ना खाय॥" [भयानक रस]
- ✓ **स्पष्टीकरण:** उपर्युक्त सभी पदों को पढ़ने पर हमारे हृदय में वीरता, क्रोध, जुगुप्सा, भय के भाव उत्पन्न होते हैं। अतः इन पदों में ओज गुण माना जाता है।

3. माधुर्य गुण

- ✓ ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ने या सुनने पर हमारे हृदय में श्रृंगार, हास्य, करुणा, शांति, वात्सल्य इत्यादि के भाव उत्पन्न हो जाते हैं, तो वहाँ माधुर्य गुण माना जाता है।
- ✓ वैदर्भी रीति की तरह माधुर्य गुण युक्त रचनाओं में भी सामासिक पदों/संयुक्ताक्षरों/ट वर्गीय वर्णों का लगभग अभाव पाया जाता है। अथवा बहुत कम प्रयोग किया जाता है।
- ✓ → श्रृंगार, हास्य, करुण, शांत, वात्सल्य इत्यादि रस युक्त पदों में प्रायः माधुर्य गुण ही माना जाता है।
- ✓ → आचार्य भिखारीदास ने माधुर्य गुण की परिभाषा काव्य निर्णय में देते हुए लिखा है – "अनुस्वार औ वर्णयुत, सबै वर्ग अटवर्ग। अच्छर जामै मृदु परे, सौ माधुर्य निसर्ग॥" अर्थात जब किसी पद में ट वर्ग को छोड़कर अन्य कोमल वर्णों का प्रयोग होता है एवं अनुस्वार का प्रयोग भी किया जाता है, कोमल, कान्त पदावली प्रयोग में ली जाती है तो वहाँ माधुर्य गुण माना जाता है।
- ✓ **माधुर्य गुण उदाहरण –**

  "कहत, नटत, रिझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात। भरे मौन में करत हैं, नैननि ही सों बात॥" [संयोग श्रृंगार रस]

  "पत्नी बिस्तर पर पड़ी, व्याकुल घर के लोग। व्याकुलता के कारणे, समझ न पाये रोग। समझ न पाये रोग, तब एक वैद्य बुलाया। इसको माता निकली है, उसने यह समझाया – कह काका कविराय, सुनहु हे मेरे भाग्य विधाता। हमने समझी थी पत्नी, यह तो निकली माता॥ [हास्य रस]

  "मेरे हृदय के हर्ष हाय! अभिमन्यु अब तू है कहाँ। हग खोलकर बेटा, तनिक तो देख हम सबको यहाँ। मामा खड़े हैं पास तेरे तू भूमि पर है पड़ा। निज गुरुजनों के मान का तो ध्यान था तुझको बड़ा॥

  "अब लौ नसानी, अब न नसै हों। राम कथा भव निसा सिरानी, फिरि न उसेहों॥" [करुण रस]

  "वरनत की पंगति कंदकली, अधराधर पल्लव खोलनि की। चपला चमकै धन बीच जुगे, छबि मोतिन माल अमोलन की। घुंघरारि लटे लटकै मुख ऊपर, कुँडल लाल कपोलन की। निवदावरि प्राण करै तुलसी, बलि जाऊ लला इन बोलनि की॥" [वात्सल्य रस]

  "अभि हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार, जियत मरत झुकि झुकि परतें, जे चितवत इक बार॥" [श्रृंगार रस]
- ✓ **स्पष्टीकरण:** उपर्युक्त सभी **पदों** को पढ़ने पर हमारे हृदय में श्रृंगार, हास्य, करुणा, शांति, वात्सल्य इत्यादि भाव उत्पन्न होते हैं। अतः इन सभी पदों में माधुर्य गुण माना जाता है।

2
CHAPTER

काव्य दोष

- किसी व्यक्ति या वस्तु में किसी प्रकार की कोई कमी होना ही उसका दोष कहलाता है।
- इसी प्रकार किसी काव्य में भी यदि किसी प्रकार की कोई कमी होती है तो वह काव्य दोष माना जाता है।
- आचार्य मम्मट ने स्वरचित काव्य प्रकाश रचना में काव्य की परिभाषा देते हुए लिखा है-
- "तददोषौ शब्दार्थों सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।"
- अर्थात् दोष रहित, सगुण और कहीं-कहीं अलंकारयुक्त रचना काव्य कहलाती है। इस तरह 'मम्मट' के अनुस' दोषपूर्ण रचना काव्य नहीं मानी जाती है।
- दोष की परिभाषा- विभिन्न आचार्यों ने काव्य दोष को निम्नानुसार परिभाषित किया है-
- साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार- "रसापकर्षका: दोषा:" अर्थात् काव्य में शुंगार, हास्य, करुण आदि रसों को नए करने वाले तत्व दोष कहलाते है
- काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट के अनुसार-
- "मुख्यार्थहतिर दोषा:" अर्थात् काव्य के मुख्यार्थ (अभिथेचार्ष) को नए करने वाले तत्त दोष कहलाते हैं।
- काव्यालंकारसूत्रवृत्तिकार आचार्य वामन के अनुसार-
- "गुण विपर्ययात्मानो दोषा:" अर्थात् काव्य में प्रसाद, ओज, भायुर्ष आदि गुणों के विरोधी तत्व दोष कहलाते हैं
- अग्निपुराण व चन्द्रालोककार आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव के अनुसार-
- "उद्वेकजनको दोष:" अर्थात् पढ़ने पर चित्र में चिंता उस्पर करने कली काव्यरधना दोषपूर्ण मानी जाती है।
- सारांश:- उपर्युक सभी तथ्यों के आधार पर चह कहा जा सकता है कि किसी भी काव्य रचना में रस, गुण, मुख्यार्य आदि को नए करने वाले तत्त्व एवं मानसिक चिंता में वृद्धि करने वलले तत्व 'काव्य दोप' कहलाते हैं।
- काव्य दोषों का वर्गीकरण:- दोषों का वर्गीकरण सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में किया था। इन्होंने काव्य दोषों के निम्न दस भेद स्वीकार किये थे-

1. गूढ़ार्थ
2. अर्थान्तर
3. अर्थहीन
4. भिन्नार्थ
5. एकार्थ
6. अभिप्लुतार्थ
7. न्यायादपेत
8. विषम
9. विसंधि
10. शब्दच्युत

- इसके बाद भामह ने इक्कीस, दण्डी ने पुन: दस, वामन ने बीस (चार मुख्य दोष एवं चारों के पाँच-पाँच उपभेद) काव्य दोषों का वर्णन किया।
- परन्तु सभी काव्य दोषों का अध्ययन करने के उपरान्त काव्य के समस्त प्रकार के दोषों को मुख्यतः निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है-

1. शब्द दोष या पद दोष
2. वाक्य दोष या रस दोष
3. अर्थ दोष

शब्द दोष या पद दोष

- व्याकरण के नियमों के विरुद किसी शब्द या पद के प्रयोग को शब्द दोष या पद दोष कहा जाता है अर्थात् जब किसी काव्य में व्याकरण संबंधी कोई त्रुटि पायी जाती है तो वहाँ शब्द दोष या पद दोष माना जाता है। जैसे- कुमूदिनी खिल गया, बाल रवि को देखि।"
- प्रस्तुत पद में प्रयुक्त 'कुमुदिनी' शब्द स्त्रीलिंगवाचक शब्द है, जबकि इसके साथ पुल्लिंगवाचक क्रिया पद (खिल गया) का प्रयोग किया गया है, अतएव व्याकरण संबंधी कमी होने के कारण यहाँ शब्द दोष या पद दोष माना जाता है।

  " आप सी सौजन्यता देखी न जाती है कहीं।"
- प्रस्तुत पद में प्रयुक्त 'सौजन्यता' शब्द वर्तनी की दूष्टि से अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप 'सौजन्य' अथवा 'सुजनता' होता है। अतएव यहाँ शब्द दोष या पद दोष है।

वाक्य दोष या रस दोष

- वाक्य की रचना में पाया जाने वाला दोष वाक्य दोष या रस दोष कहलाता है अर्थात् जब किसी काव्य में क्रमभंग संबंधी कोई त्रुटि पायी जाती है तो वहाँ वाक्य दोष या रस दोष माना जाता है। जैसे:-

  "अमानुषी भूमि अबानरी करौं।"
- राक्षसराज रावण द्वारा उक्त प्रस्तुत पंक्ति में रावण का कहने का अभिप्राय तो यह है कि 'में इस भूमि को मनुष्यों व बन्दरों से रहित कर दूँगा ।' परन्तु यहाँ वाक्य की शब्द क्रम योजना को देखने से इसका यह अर्थ निकलता है कि 'में मनुष्यों से रहित इस भूमि को बंदरों से रहित कर दूँगा।' अतएव यहाँ वाक्य दोष या रस दोष है।
- "बकरी को काटकर गाजर खिला दो।"
- "बच्चे को प्लेट में रखकर खाना खिला दो।"
- " विश्व में मिलते नहीं हैं वीर भीम समान के।"

अर्थदोष

- किसी काव्य रचना में अर्थ से संबंध रखने वाले दोष अर्थदोष कहलाते हैं। सामान्यतः जब किसी वाक्य में एक ही अर्थ को प्रकट करने वाले अनावश्यक शब्दों का प्रयोग कर दिया जाता है तो वहाँ अर्थ दोष माना जाता है। जैसे:-

  1. "बाँध्यों जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु वारीश। सत्य तोयनिधि, कंपति, पयोधि, नदीश।।"

     प्रस्तुत पद में प्रयुक्त 'जलनिधि, नीरनिधि, जलधि, सिंधु, वारीश' इन सभी शब्दों का अर्थ 'समुद्र' होता है। अतः एक ही अर्थ प्रकट करने के लिए अनेक अनावश्यक शब्दों का प्रयोग होने के कारण यहाँ वाक्य दोष या रस दोष माना जाता है।
  2. "मैं प्रातः काल के समय घूमने जाता हुँ।"
  3. "हम रविवार के दिन यहाँ नहीं आते हैं।"
  4. "मीर्यकाल के दिनों में इतना जाति द्वेष नहीं था।"

श्रुतिकटुत्व दोष

- 'श्रुति' का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुनना' एवं 'कटुत्व' का अर्थ होता है 'कड़वापन' अर्थात् जो शब्द सुनने में अप्रिय लगते हैं या कठोर प्रतीत होते है, वस्ताँ श्रुतिकटुत्व दोष माना जाता है।
- पहचान के लिए जब किसी काव्य में मूर्धन्य वर्णों या संयुक्त वर्णों का अधिक प्रयोग हो जाता है, वहाँ श्रुतिकटुत्व दोष होता है।
- इस दोष को 'दु:श्रवत्व दोष' भी कहा जाता है। जैसे :-

  1. "त्रिया अलक छुच्छुछुवा डसै परत ही दृष्टि।"
  2. "पावन पद वंदन करके प्रभु कब कार्यार्थ मिले मुझसे।"
  3. "कब की इकटक डटि रही, टटियन अंगुरी डारी।"

4. " कवि के कठिनतर कर्म की करते नहीं हम धृष्टता। पर क्यों न विषयो क्रुप्टता करती विचारोक्कृष्टता ।।"
5. "सृष्टि दृष्टि के अंजन रंजन ताप विभंजन बरसो। व्यग्र उदग्र जगजननी के अये अग्रस्तन बरसो।।"
6. "कटर कटर तण्डुल चबात हरि हंसी हंसी के। हियरा चटकात हरि, रुकमिन महारानी के।।"
7. "लटकि लटकि लटकतु चलत डटतु मुकुट की छाँह। चटक भरयो नट मिलि गयो अटक भटक बट माँह।।"
8. "वक्र वक्र करि पृच्छा करि, रुष्ट रिच्छ कपि गुरु। सुभट्ट ठह घन पट्ट सम, मर्दहि रच्छस तुच्छ।।"
9. शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
10. चक्कि चक्कि पिय सामुहें, लक्खी लक्खी यह रूप।

ग्राम्यत्व दोष

- काव्य में प्रायः साहित्यिक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है, परन्तु जब कवि/लेखक के द्वारा काव्य में भी ग्रामीण बोलचाल के शब्दों का प्रयोग कर दिया जाता है, तो वहाँ **ग्राम्यत्व दोष** माना जाता है। जैसे – **"मुँड पर मुकुट धरे, सोहत हैं गोपाल।"**
- प्रस्तुत पद में कवि ने 'मस्तक' अर्थ को प्रकट करने के लिए ग्रामीण बोलचाल के शब्द 'मुँड' का प्रयोग किया है, अतएव यहाँ ग्राम्यत्व दोष माना जाता है।
- **अन्य उदाहरण:**
  - ✓ "टूटी खाट पर टपकट टटिया टूटि।"
  - ✓ "पड़े झटोले पे रहे, नींद न आई रात।"
  - ✓ "सृष्टि के प्रारंभ में मैंने, उषा के चूमे गाल।"
  - ✓ "हेरत-हेरत हरि क्यों रसखाने बतायौ न लोग-लुगाइन।।"
  - ✓ "स्वर्ण शालियों की कलमें थीं, दूर-दूर तक फैल रहीं।
    शरद इन्दिरा के मंदिर की मानो कोई रेखा चल रही।।"
  - ✓ "कसे कहते हो इस दुआर पर फिर से कभी न आऊँ।"
  - ✓ "मुंड मुंडाए हरि मिले, हर कोई लेय मुंडाए।
    बार बार के मुडिए, भेड़ न बैकुण्ठ जाय।।"
  - ✓ "भाखि लेठ भोजन औरु पानी हूँ ढकोसि लेहु।"
  - ✓ "चपल चारु लोचन चलते थे, ढेढूआ की आँखिन से नित्य।।"

    नोट: ग्रामीण बोलचाल में 'तेंदुआ' शब्द का प्रयोग 'काले मुँह वाले बंदर' के लिए किया जाता है।

अप्रतीतत्व दोष

लोक व्यवहार में प्रयुक्त न होने वाले शास्त्रीय शब्दों का काव्य में प्रयोग होना **अप्रतीतत्व दोष** कहलाता है। शब्दकोश में एक ही शब्द के कई या अनेक अर्थ भी प्राप्त होते हैं, परन्तु उनमें से लोक-प्रसिद्ध अर्थ कोई एक तो होता ही है। परन्तु यदि कोई कवि अपने काव्य में उस लोक-प्रसिद्ध अर्थ का प्रयोग न करके किसी अन्य शास्त्रीय अर्थ में उसका प्रयोग करता है, तो वहाँ **अप्रतीतत्व दोष** माना जाता है। जैसे **:**

1. **"विषमय यह गोदावरी अमृतन को फल देत। केशव जीवन हार को, असेस दुख हर लेत।।"**

   'विष' का लोक-प्रसिद्ध अर्थ 'जहर' है, परन्तु कवि ने यहाँ इसका प्रयोग 'जल' अर्थ में किया है (शब्दकोश में 'विष' का अर्थ 'जल' भी मिलता है), अतः लोक-प्रसिद्धि के विरुद्ध अर्थ होने के कारण यहाँ **अप्रतीतत्व दोष** है।

2. **"जहाँ नहीं सामर्थ शोध की, भूमा वही निष्फल है।"**

'शोध' का लोक-प्रसिद्ध अर्थ 'खोज' या 'अनुसंधान' है, परन्तु कवि ने यहाँ इसका प्रयोग 'प्रतिशोध' (बदला) के अर्थ में किया है, अतः यहाँ **अप्रतीतत्व दोष** है।

3. **"पुत्र जन्म उत्सव समय, स्पर्श कीनि कहु गाय।"**

'स्पर्श' का लोक-प्रसिद्ध अर्थ 'छूना' होता है, परन्तु कवि ने यहाँ इसका प्रयोग 'दान' अर्थ में किया है, अतः यहाँ **अप्रतीतत्व दोष** है।

4. **"भुलुंठित कलरव तुल्य, उसका शीश लोटेगा पड़ा।"**

'कलरव' का लोक-प्रसिद्ध अर्थ 'पक्षियों की चहचहाहट' है, परन्तु कवि ने इसका प्रयोग 'कोयल' अर्थ में किया है, अतः यहाँ **अप्रतीतत्व दोष** है।

5. **"तत्त्वज्ञान पाकर हुए आशय दलित समस्त।"**

'आशय' का लोक-प्रसिद्ध अर्थ 'तात्पर्य' होता है, परन्तु कवि ने यहाँ इसका प्रयोग 'मिथ्या ज्ञान या वासना' अर्थ में किया है, अतः **अप्रतीतत्व दोष** है।

6. **"तत्त्वज्ञान प्रकाश सों, दलिताशय जो आहि। विधिनिषेध मयकर्म सब, बाधक होहिं न ताहि।।"**

यहाँ भी 'आशय' शब्द का प्रयोग 'मिथ्या ज्ञान या वासना' अर्थ में होने के कारण अप्रतीतत्व दोष है।

7. **"जग जीव जतीन की छुटी तरी"**

यहाँ 'तटी' शब्द का प्रयोग हठयोग में प्रयुक्त 'त्राटक मुद्रा' अर्थ के लिए किया गया है जो लोक व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होता है, अतएव यहाँ अप्रतीतत्व दोष है।

8. **देखा है आज मैंने अचल हुआ चल, सिंधु संस्था विहीना।"**

यहाँ 'संस्था' शब्द का प्रयोग 'मर्यादा' अर्थ में होने के कारण अप्रतीतत्व दोष माना जाता है।

9. **" यमुना संबर विमल सों, छटत कलिमल कोस।"**

'संबर' का लोक प्रसिद्ध अर्थ 'शंबर नामक राक्षस' है। परंतु कवि ने याएँ इसका प्रयोग 'जल' अर्थ में किया है। अतः यहाँ अप्रतीतत्व दोष है।

Unleash the topper in you

क्लिष्टत्व दोष

- जहाँ किसी काव्य का अर्थ सहज ही समझ में नहीं आता है, अपितु बड़ी कठिनाई से उसका अर्थ ज्ञात किया जा सकता है तो वहाँ क्लिष्टत्व दोष माना जाता है।
- कहने का तात्पर्य यह है कि जब किसी काव्य में अनेक शब्दों को आपस में मिलाकर अर्थात् एक दूसरे से जोड़कर कोई अर्थ प्रकट होता है तो वहाँ क्लिष्टत्व दोष माना जाता है। जैसे : —

1. **"अजा सहेली तासु रिपु, ता जननी भरतार। ता के सुत के मित्र को, भजिए बारम्बार।।"**

अजा = बकरी, बकरी की सहेली = भेड़, भेड़ का रिपु (शत्रु) = भरभूँट/मुसकरिया काँटा, उस भरभूँट की जननी = पृथ्वी, पृथ्वी का भरतार (पति) =इन्द्र, इन्द्र का सुत (पुत्र) =अर्जुन, अर्जुन का मित्र=श्रीकृष्ण

अर्थात् कवि यहाँ यह कहना चाहता है कि हमें भगवान कृष्ण का बार—बार भजन करना चाहिए।

2. **"षट् पद षट् कर षट् करण, नेत्र दोय तन तीन।**
ता रिपु सुत के चरण में, सदा रहो लव लीन।।"

यहाँ उस स्थिति का वर्णन किया जा रहा है जब श्रवण कुमार अपने अंधे माता—पिता को तीर्थ—यात्रा पर ले जा रहा है। उन तीनों के छह पैर, छह हाथ एवं छह कान हैं। माता—पिता अंधे होने के कारण आँखें केवल दो ही हैं। उनका शत्रु 'दशरथ' एवं दशरथ का पुत्र 'राम' है। अर्थात् यहाँ कवि यह कहना चाहता है कि हमें सदा भगवान राम के चरणों में नतमस्तक रहना चाहिए।

3. "चार मिले चौसठ खिले, बीस रहे कर जोड़।

सजन से सज्जन मिले, हरषित तीस करोड़।।"

चार = आँखें, चौसठ = दाँत, बीस = हाथों की उँगलियाँ, तीस करोड़ = शरीर के रोम

अर्थात् जब एक सज्जन दूसरे सजन से मिलता है एवं वे अभिवादन करते हैं तो सबसे पहले उनकी चार आँखे (2+2) आपस में मिलती हैं, इसके बाद चौसठ दाँत (32 + 32) खिल उठते हैं। बीस उँगलियाँ (10 + 10) आपस में जुड़कर (हाथ जोड़कर) नमस्ते करती हैं तो उनके शरीर के तीस करोड़ रोम—रोम (15 करोड़+ 15 करोड़) प्रसन्न हो जाते हैं।

4. कहो न कोई परदेसी री बात।

रवि पंचमी ले गयो साँवरो घर आँगन न सुहात।

तड़फूं इकली रंगमहल में कोई न पूछत बात।

कर पर कीर कीर पर पंकज, पंकज पर दोक पात।

एक अचम्भो सुण्यो सखि री, दधिसुत में जल जात।

मन्दिर अर्द्ध भाग हरि कह गये सिंह भख यों ही जात।

शशि रिपू वरषरु युगभर हररिपु कीन्हों घात।

गृह नखत वेद को आधो अब को बरजै खात।

सूरदास प्रभु विरहन व्याकुल कर मीजत पछितात।।

रवि पंचमी =सर्य आदि नव ग्रहों में पाँचवें क्रम का ग्रह (बृहस्पति या जीव), कर पर कीर—हाथ पर तोता (गुदवा रखा है) कौर पर पंकज—तोते पर कमल अर्थात् नायिका (गोपिका) कृष्ण वियोग में तोता गुदे हाथ को आँखों की पलकों का सिरहाना लगाकर लेटी हुई है, दधिसुत = कमल, मन्दिर = महीना, मन्दिर अर्द्धभाग = पन्द्रह दिन, सिंह भख = सिंह का भोजन माँस अर्थात् मास अर्थात् महीना, शशिरिपु = दिन का समय, सुररिपु = रात का समय, हररिपु = कामदेव, ग्रह = नौ होते हैं, नखत = नक्षत्र 27 होते हैं, वेद = चार होते हैं, इन सबका जोड़ (9+27+4) चालीस होता है, तथा चालीस का आधा बीस होता है, जिसे 'विष' अर्थ में ग्रहण किया गया है।

ज्योतिष अनुसार ग्रहों का सही क्रम - "आचकुराजीशुबुकेश" प्रस्तुत पद में कृष्ण वियोग में व्याकुल एक गोपिका कहती है कि उस परदेसी कृष्ण की कोई तो बात मुझे बताओ। सूर्य आदि नवग्रहों में पाँचवें क्रम का ग्रह 'जीव' अर्थाव् हमारा हृदय तो वह कन्हैया (साँवरा) चुरा कर ले गया है, अतः अब मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। वह गोपिका कृष्ण-वियोग में अकेली तड़फ रही है। इसकी खैर-खबर लेने वाला कोई नहीं है।

उस गोपिका ने अपने हाथ पर तोता गुदवा रखा है तथा उस हाथ को वह अपनी आँखों की पलकों के नीचे सिरहाना (तकिया) रूप में लगाकर लेटी हुई है। आँखों से अनवरत अश्रुधारा बह रही है, जिसको देखकर ऐसा लगता है कि आज तो कमल (पलकें) भी समुद्र (अश्रुधारा) में डूब जायेगा।

वह गोपिका आगे कहती है कि वह कृष्ण हमें पन्द्रह दिन (मंदिर अर्द्धभाग) में लौटने की कह कर गया था, लेकिन एक महीना यों ही बीत गया, वह वापस नहीं आया। उसके वियोग में मेरा दिन एक वर्ष के समान और रात एक युग के समान लगती है क्योंकि कामदेव ने मुझ पर अपना वार कर रखा है अर्थात् वह युवावस्था में काम भावना से पीड़ित है।

इस स्थिति ग्रह + नक्षत्र + वेद (9+27+4) को आधा अंश (बीस) अर्थात् विष (जहर) खाने से अब मुझे कौन रोक सकता है। 'सूरदास' जी कहते हैं कि कृष्ण वियोग में गोपिकाएँ हाथ मलमल कर पछतावा कर रही हैं कि उन्होंने कृष्ण को यहाँ से क्यों जाने दिया।

5. **"हे हर हार अहार सुत मैं विनवत हूँ तोय। बैरिन के पति सुतन सौं आजु मिला दे मोय**

हर हार = शिव का हार अर्थात् सर्प, सर्प का आहार (भोजन) = वायु अर्थात् तथा पवन का पुत्र = हनुमान जी, वैरिन = कैकेयी, कैकेयी का पति = दशरथ, दशरथ का पुत्र = राम।

अर्थात् प्रस्तुत पद में एक भक्त हनुमान जी से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे हनुमान जी ! तुम मुझे आज ही राम से मिला दो।

6. **"अहिरिपुपतिप्रिया सदन है, तेरा मुख कमनीय।"**

अहि = सर्प, सर्व का शत्रु = गरुड़, गरुड़ का पति = विष्णु, विष्णु की प्रिया = लक्ष्मी, लक्ष्मी का सदन (निवास) = कमल अर्थातू हे कामिनी ! तुम्हारा मुख तो कमल के समान है।

7. **"खूगपतिपतितियपितृवथू जल समान तव बैन।"**

खगपति = गरुड़, गरुड़ का पति = विष्णु, विष्णु का तिय = लक्ष्मी, लक्ष्मी का पिता = समुद्र, समुद्र की वधू = गंगा अर्थातू तुम्हारी वाणी गंगा जल के समान है।

8. **"हेम सुता पति वाहन प्रिय, तुम इसमें रत्ती ज फैर।"**

हेम सुता = हिमालय की पुत्री पार्वती, पार्वती का पति = शिव, शिव का वाहन = बैल अर्थात् मूर्ख अर्थात तुम बहुत मुख हो, इसमें तनिक भी संशय नहीं है।

9. **सारंग ले सारंग उड्यो, सारंग पुर्यो आय। जे सारंग सारंग कहे, मुख को सारंग जाय।**

10. **"तरुरिपुरिपुधर देखि के विरहिनि तिय अकुलाय।।"**

तरु = पेड़, पेड़ का रिपु = आग, आग का रिपु = जल, जल + धर = जलधर यानी बादल

अर्थात् बादल को देखकर विरहिणी नायिका व्याकुल हो जाती है।

11. **"विधि-जननी-जा जीव जब देख रहे मुख खोल। पर नखत घन घर तजा, शोभित किया कपोल।।"**

विधि = ब्रह्मा, ब्रह्मा की जननी = कमल, कमल का उत्पत्ति स्थल = समुद्र, समुद्र का जीव = सीप, पख नखत = पन्द्रहवाँ नक्षत्र अर्थात् श्वाति, घन घर = आकाश

अर्थात् कमल जिसमें उत्पन्न हुआ उस समुद्र के जीव अर्थात् सीप अपना मुँह खोल कर आसमान की ओर देख रही थी, उसी समय श्वाति नक्षत्र की बूँद आकाश को छोड़कर उसके मुख में आ गिरी और मोती बन गयी। वह मोती नायिका की नथ में पिरोया, जिसने नायिका के कपोल की शोभा बढायी।

12. **"हंसवाहिनी पति पिता दल समान हैं नैन।"**

हंसवाहिनी = सरस्वती, सरस्वती का पति = ब्रह्मा, ब्रह्मा का पिता = समुद्र, समुद्र दल = कमल

अर्थात् तुम्हारी आँखें कमल के समान सुंदर हैं।

13. **"त्रिचक तीनों कर रहें, बैगहं को असवार। पालसा सहित प्रभु सूर के भजिए बारंबार।।"**

त्रि = त्रिशूल, बै = बैल, पा = पार्वती, च = चक्र, ग = गरुड़, ल = लक्ष्मी, क = कमंडल, हं = हंस, सा = सावित्री

अर्थात् जिनके हाथों में त्रिशूल, चक्र एवं कमंडल है, जो क्रमशः बल, गरुड़ व हंस की सवारी करते हैं, उनकी अर्द्धांगिनियों क्रमशः पार्वती, लक्ष्मी व सावित्री के हमें बार-बार त्रिदेवों (शिव, विष्णु व ब्रह्मा) का भजन करना चाहिए।

14. **"लंका पुरी पति को जो भाता, तासु प्रिया नहीं आवति।"**

लंकापुरी का पति = रावण, रावण का भ्राता = कुम्भकर्ण, कुम्भकर्ण की प्रिया = निद्रा (नींद)

अर्थात् आज मुझे नींद नहीं आ रही है।